International Journal of Applied Research 2022; 8(8): 123-126

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(8): 123-126
www.allresearchjournal.com
Received: 11-06-2022
Accepted: 14-07-2022

डॉ. वीना उपाध्याय
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, करामत हुसैन गर्ल्स पी0जी0 कालेज, निशातगंज, लखनउ, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. वीना उपाध्याय
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, करामत हुसैन गर्ल्स पी0जी0 कालेज, निशातगंज, लखनउ, उत्तर प्रदेश, भारत

भारत और विश्व बैंक की साझेदारी के पचहत्तर वर्षों का समीक्षात्मक विश्लेषण

डॉ. वीना उपाध्याय

सारांश
स्वतंत्र होने के बाद से, भारत ने विकास की एक लंबी और सफल यात्रा पूरी की है। यह देश कभी निम्न आय वाला देश था, मगर वर्तमान में मध्य आय वर्ग का दर्ज़ा हासिल किया है, आबादी 1.2 अरब से ज्यादा है और इसकी अर्थव्यवस्था का आकार लगभग 30 अरब डॉलर है। इसके साथ ही भारत रियायती दरों पर ऋण प्राप्तकर्ता देश से एक ऋण प्रदाता देश बन चुका है। विश्व बैंक और भारत के बीच साझेदारी के 75 वर्ष पूरे होने पर, हम बीते दशकों में भारत द्वारा प्राप्त की गई कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों की समीक्षा कर रहे हैं, जिसके लिए विश्व बैंक को साथ काम करने का अवसर प्राप्त हुआ।

कूटशब्दः भारत के साथ विश्व बैंक समूह

प्रस्तावना
1942 में, अमेरिका और ब्रिटिश दोनों सरकारें ऐसे नवाचारों की योजना बना रही थीं जो द्वितीय विश्व युद्ध के समाप्त होने के बाद अर्न्तराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को 1930 के दशक में वापस डूबने से रोकेंगे। उन्होंने माना कि न केवल युद्ध से बाधित अर्थव्यवस्थाओं के तत्काल राहत और भौतिक पुनर्निर्माण पर ध्यान देना होगा, बल्कि उत्पादन, रोजगार, और वस्तुओं के आदान–प्रदान और खपत के उचित अर्न्तराष्ट्रीय और आर्थिक उपायों के विस्तार पर भी ध्यान देना होगा। 1942 की शुरुआत में तैयार किए गए एक अर्न्तराष्ट्रीय बैंक के प्रस्ताव के पहले मसौदे में विकास का कोई उल्लेख नहीं था, यह मूल प्रस्ताव केवल पुनर्निर्माण के लिए एक बैंक को संदर्भित किया गया था। अप्रैल 1942 में एक मसौदा पेश किया गया जिसमें "संयुक्त और सम्बद्ध राष्ट्रों के पुनर्निर्माण के लिए बैंक" का आह्वान किया गया था और इसमें अन्य उद्देश्यों की एक लंबी सूची तैयार की गयी थी जिसके अंत में, विकास का एक संदर्भ शामिल था, जिसमें कहा गया था कि बैंक उत्पादकता और सदस्य देशों के लोगों के जीवन स्तर के सुधार हेतु मसौदा तैयार करेगा, लेकिन विशेष रूप से गरीब या कम विकसित देशों का उल्लेख करने में विफल रहा। 1.2 अरब से अधिक जनसंख्या वाला देश भारत, विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। पिछले दशक में, भारत विश्व की अर्थव्यवस्था से जुड़ा है और साथ ही उसका आर्थिक विकास भी हुआ है। भारत अब एक विश्व खिलाड़ी देश बन चुका है।

भारत के लिए विश्व बैंक का उद्देश्य
भारत को विश्व बैंक की सहायता का केंद्रीय उद्देश्य तेजी से और स्थायी वाह्य जनित विकास को बढ़ावा देना है। जिसमें निम्न तीन सहायक उद्देश्य की पूर्ति हेतु विशेष बल दिया गया हैं;

1. वर्तमान में हो रहे व्यापक आर्थिक परिवर्तन का समर्थन करने और सरकार की सहायता करने के लिए। यह एक बाजार–उत्तरदायी निजी क्षेत्र का निर्माण करता है जो हजारों नई नौकरियों के सृजन में सक्षम है। भारत व्यापार उदारीकरण, निजीकरण और वित्तीय तथा नियामक सुधार की अपनी प्रक्रिया को जारी रखता है।
2. सरकार को पानी, ऊर्जा दूरसंचार, पर्यटन, कृषि और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन जैसे अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रों में निवेश ऋण और अन्य प्रकार की सहायता प्रदान करके पर्यावरण की दृष्टि से सुदृढ़ निवेश प्रथाओं को प्रोत्साहित करते हुए बुनियादी ढांचे की बाधाओं को दूर करने में मदद करना।
3. लक्षित निवेश के माध्यम से गरीबी को कम करने के सरकार के प्रयास का समर्थन करना और सभी भारतीयों के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के अपने उत्कृष्ट प्रयास को जारी रखना।

निम्न बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दिया गया। जैसे –

- उत्पादक उद्देश्यों के लिए पूंजी के निवेश की सुविधा के लिए अपने सदस्यों के क्षेत्रों के पुनर्निर्माण और विकास में सहायता करना।
- निजी निवेशकों को ऋण और अन्य निवेश में भागीदारी पर गारंटी के माध्यम से निजी निवेश को बढ़ावा देना।
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के दीर्घकालिक संतुलित विकास को बढ़ावा देना और भुगतान संतुलन में संतुलन बनाए रखना।
- विकासशील देशों में अपनी निवेश पूंजी की आपूर्ति करके उत्पादन संसाधनों के विकास को प्रोत्साहित करना।
- पिछड़े क्षेत्रों में परियोजनाओं की स्थापना में मदद करने के लिए, इसका भीतरी इलाकों के साथ सबसे बड़ा जुड़ाव होगा, ताकि उत्पादन, रोजगार और आय में वृद्धि हो सके।
- बिजली, परिवहन, संचार और सिंचाई क्षेत्रों के विकास के माध्यम से आर्थिक बुनियादी ढांचे का विकास करना।
- शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशिक्षण के विकास के विशेष प्रोग्रामर्स को वित्तपोषित करके सामाजिक बुनियादी ढांचे के विकास में भी सहायता करना।
- विशेष क्षेत्र विकास कार्यक्रमों जैसे सूखा प्रवण क्षेत्रों, बाढ़ प्रवण क्षेत्रों या बीहड़ क्षेत्रों में सहायता करना।
- विशेष कार्यक्रमों का समर्थन करने के लिए यह बंदरगाह विकास, शहरी सेवाओं, आवास उत्पादों, सीवरेज विकास या भूमिगत रेलवे के विकास से संबंधित हो सकता है।
- तकनीकी सहायता, निजी क्षेत्र का विकास, क्षेत्र और संरचनात्मक विकास, गरीबी कम करने की रणनीति, मानव संसाधन विकास और आर्थिक अनुसंधान और अध्ययन भारत के लिए विश्व बैंक की अन्य गतिविधियाँ हैं।

स्वतंत्र होने के बाद से, भारत ने विकास की एक लंबी और सफल यात्रा पूरी की है। यह देश कभी निम्न आय वाला देश था, मगर वर्तमान में मध्य आय वर्ग का दर्ज़ा हासिल किया है, आबादी 1.2 अरब से ज्यादा है और इसकी अर्थव्यवस्था का आकार लगभग 30 अरब डॉलर है। इसके साथ ही भारत रियायती दरों पर ऋण प्राप्तकर्ता देश से एक ऋण प्रदाता देश बन चुका है। विश्व बैंक और भारत के बीच साझेदारी के 75 वर्ष पूरे होने पर, हम बीते दशकों में भारत द्वारा प्राप्त की गई कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों की समीक्षा कर रहे हैं, जिसके लिए विश्व बैंक को साथ काम करने का अवसर प्राप्त हुआ।

विश्व बैंक और भारत की विकास यात्रा के 75 वर्षों का क्रमिक विश्लेषण

- **1945:** औपनिवेशिक शासन के अधीन रहने के दौरान, भारत विश्व बैंक का एक संस्थापक सदस्य बना। पहली बार भारत के सुझाव पर विश्व बैंक में विकासशील देशों की सहायता के लिए एक विशिष्ट समूह बनाने का सुझाव दिया, जिसके आधार पर बाद में अंतर्राष्ट्रीय विकास संघ की स्थापना की गई।
- **1949:** में स्वतंत्रता प्राप्त करने के कुछ ही समय बाद भारत ने भारतीय रेलवे के विकास के लिए विश्व बैंक से पहली बार ऋण लिया। भारतीय रेलवे दुनिया के सबसे लंबे रेल नेटवर्कों में से है। ये विश्व बैंक द्वारा किसी एशियाई देश को दिया गया पहला ऋण था, और उसके साथ ही ये पहला मौका था, जिस पर किसी महिला (श्रीमती विजया लक्ष्मी पंडित) ने हस्ताक्षर किया था।
- **1950:** यह दशक भारत के विकास यात्रा के मील का पत्थर था। भारत के एक आधुनिक औद्योगिक देश बनने की ओर कदम बढ़ाने के साथ ही, विश्व बैंक ने देश के पहले बिजली संयंत्र एवं इस्पात उद्योग की स्थापना के लिए विदेशी निवेश जुटाने में उसकी मदद की (जिसमें बोकारो, दुर्गापुर, टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी भी शामिल है)। इन उद्योगों की महत्ता इस बात से ही साबित हो जाती है कि इन्हें "आधुनिक भारत के मंदिर" की उपमा दी गई। विश्व बैंक ने कलकत्ता और मद्रास (वर्तमान में, कोलकाता और चेन्नई) बंदरगाहों के नवीनीकरण में भारत की सहायता की और एयर इंडिया (भारत की राष्ट्रीय वायु सेवा) को अपने बेड़े के विस्तार एवं आधुनिकीकरण करने में सहयोग प्रदान किया।
- **1960:** इस दशक में जब लगातार सूखे की समस्या से देश में खाद्यान्न संकट पैदा हुआ और भारत को अपनी तेजी से बढ़ती जनसंख्या के लिए बाहर से अनाज़ खरीदना पड़ा, तब विश्व बैंक ने भारत के साथ मिलकर देश में हरित क्रांति की नींव रखी। उसकी परियोजनाओं की मदद से देश में खेतिहर भूमि की उपलब्धता में वृद्धि हुई और आगे चलकर आयात पर निर्भर रहने वाला देश विश्व पटल पर एक मजबूत कृषि शक्ति के रूप में उभरा और अनाजों के आयातक से निर्यातक में बदल गया। विश्व बैंक ने हैवी इलेक्ट्रिकल्स और व्यावसायिक वाहनों समेत भारत के नए पूंजीगत माल उद्योगों की भी सहायता की।
- **1970:** इस दशक में जैसे–जैसे भारत ने कृषिगत विकास पर और अधिक ज़ोर देना शुरू किया, विश्व बैंक ने उच्च उपज वाले बीजों और उर्वरकों की उपलब्धता सुनिश्चित करते हुए खाद्यान्न–भंडारण की सुविधाओं के निर्माण के लिए भारतीय खाद्य निगम को सहायता तथा दुग्ध सहकारिता क्षेत्र में विशेष प्रगति की। इस ऐतिहासिक आंदोलन को "ऑपरेशन फ्लड" या "सफ़ेद क्रांति" के रूप में जाना जाता ।
- **1980:** वैश्विक तेल संकट के पैदा होने पर, भारत ने ऊर्जा के स्वदेशी स्रोतों पर ध्यान केंद्रित किया, जिसके परिणामस्वरूप मुंबई हाई (बॉम्बे हाई) और कॉम्बे बेसिन में तेल और गैस के खनन की सुविधा विकसित करने और कृष्ण गोदावरी डेल्टा में हाइड्रोकार्बन के भंडार को खोजने में विश्व बैंक ने भारत सरकार की सहायता की। मालवाहक जहाज़ों के आगमन के साथ ही, विश्व बैंक ने मुंबई के पास न्हावा शेवा बंदरगाह की स्थापना में मदद की, जो मालवाहक जहाज़ों के अनुकूल भारत का सबसे बड़ा बंदरगाह है।
- **1990:** इस दशक में भारत में ऐतिहासिक आर्थिक सुधारों की घोषणा के बाद वैश्वीकृत अर्थव्यवस्था के महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों के प्रबंधन के लिए संस्थानों के निर्माण में विश्व बैंक ने भारत की सहायता की। इसमें भारत का पावरग्रिड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (केंद्रीय विद्युत पारेषण उपयोगिता) और भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण जैसे संस्थान शामिल थे। जहां पावरग्रिड आज दुनिया के सबसे बड़े ऐसे संस्थानों में एक है, वहीं भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने पूरे देश में सड़कों का जाल बिछाया है। ग्रामीण जल आपूर्ति के क्षेत्र में कई प्रगतिशील सुधारों को लागू करने में भी विश्व बैंक ने भारत की मदद की। इस दौरान विश्व बैंक की परियोजनाओं ने भारत को कई संक्रामक रोगों से निपटने में सहायता की, जिसके कारण भारत से कुष्ठ रोग का उन्मूलन संभव हुआ। मोतियाबिंद से अंधेपन के मामलों में कमी आई, पोलियो के खिलाफ़ बहुत बड़े स्तर पर टीकाकरण अभियान चलाया गया, मलेरिया और तपेदिक जैसी घातक बीमारियों रोकथाम एवं उपचार के लिए गहन प्रयास किए गए और इसके साथ ही औरतों और बच्चों में पोषण में सुधार पर ध्यान केंद्रित किया गया। भारत 2014 से पोलियो मुक्त हो चुका है।

- **2000:** इक्कीसवीं सदी के पहले दशक में जब भारत ने हर बच्चे को स्कूल में लाने के लिए बड़े पैमाने पर अभियान शुरू किया, तो विश्व बैंक ने देश के "सभी के लिए शिक्षा" कार्यक्रम का समर्थन करते हुए भारत के प्राथमिक स्कूलों में बच्चों का नामांकन बढ़ाने में अपना योगदान दिया। ये दुनिया के सबसे बड़े साक्षरता अभियानों में से एक है। अकेले विश्व बैंक की सड़क परियोजना ने ही 48 हजार किमी लंबी ग्रामीण सड़कों का निर्माण किया। विश्व बैंक के कार्यक्रमों ने भारत के राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन का पूरा समर्थन किया।
- **2010:** का दशक कई बड़ी परियोजनाओं से जुड़ा रहा है, जिसमें भारत के पहले बिजली आधारित रेलवे कॉरिडोर का निर्माण, लंबे समय से बंद पड़े आंतरिक जलमार्गों का पुनरुद्धार और मल्टीमॉडल परिवहन तंत्रों का विकास शामिल है। ये परियोजनाएं भारत को अपनी माल ढुलाई की उच्च लागत को कम करने, सभी तंत्रों को एक बाज़ार से जोड़ने और हरित विकास लक्ष्यों को पूरा करने में सहयोग कर रही हैं।

वर्त्तमान में भारत सौर ऊर्जा के क्षेत्र में वैश्विक शक्ति बन कर उभर रहा है, ये परियोजनाएं कई स्वच्छ ऊर्जा पहलों के क्रियान्वयन में मदद कर रही हैं, जिनमें बड़े पैमाने पर सोलर पार्कों के निर्माण से लेकर छतों पर सोलर पैनल लगाने जैसी गतिविधियों शामिल हैं।

भारत द्वारा खुले में शौच की प्रथा को समाप्त करने के लिए चलाए जा रहे ऐतिहासिक अभियान का समर्थन करते हुए विश्व बैंक ने ग्रामीण इलाकों में व्यवहार परिवर्तन के जरिए व्यापक बदलाव लाने पर ज़ोर दिया। इसके अलावा, विश्व बैंक ने पौराणिक महत्त्व रखने वाली गंगा नदी के पुनरुद्धार योजना के प्रबंधन के लिए नदी बेसिन आधारित एक व्यापक दृष्टिकोण को अपनाने पर बल दिया है। 2001में गुजरात के विनाशकारी भूकंप और 2004 में आई सुनामी से होने वाली तबाही के बाद विश्व बैंक परियोजनाओं ने देश की पुनर्निर्माण में सहायता की।

- **2020:** कोरोना महामारी ने जब देश के सामने अभूतपूर्व संकट की स्थिति पैदा कर दी, तब विश्व बैंक ने भारत की तात्कालिक स्वास्थ्य जरूरतों को पूरा करने, गरीबों को भोजन और नकद सहायता पहुंचाने और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को सुरक्षा प्रदान करने में सहायता की।

वर्तमान में, भारत में विश्व बैंक द्वारा समर्थित कुल 127 सक्रिय परियोजनाएं काम कर रही हैं, जिसमें बैंक ने अब तक कुल 28 अरब डॉलर का निवेश किया है। फिर भी, विश्व बैंक द्वारा मिलने वाली आर्थिक सहायता भारत की लगभग 30खरब डॉलर की अर्थव्यवस्था का एक बहुत छोटा सा हिस्सा है, जो देश के सकल घरेलू उत्पाद का एक प्रतिशत से भी कम है।

यद्यपि, वित्त वर्ष 2021 में अच्छी तरह से तैयार की गई राजकोषीय और मौद्रिक नीति के समर्थन के बावजूद कोविड–19 महामारी के कारण भारत की अर्थव्यवस्था में 7.3 प्रतिशत की कमी आयी। घातक 'दूसरी लहर' के बाद वित्त वर्ष 2022 में विकास दर 7.5 से 12.5 प्रतिशत के दायरे के निचले स्तर पर रहने की उम्मीद है, जो भारत को अभी भी दुनिया के सबसे तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्थाओं में रखता है। जो कृषि और श्रम सुधारों का सफल कार्यान्वयन, मध्यम अवधि के विकास को बढ़ावा देगा। माना जा रहा है कि महामारी से प्रेरित आर्थिक सुस्ती का गरीब और कमजोर परिवारों पर विशेष रूप से उल्लेखनीय प्रभाव पड़ा है। महामारी के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए प्रति व्यक्ति जीडीपी विकास के वर्तमान अनुमान बताते हैं कि 2020 में गरीबी दर के 2016 के अनुमानित स्तर तक पहुंचने की संभावना है।

विश्व बैंक समूह और भारत

भारत के साथ विश्व बैंक समूह (WBG) की सात दशक पुरानी साझेदारी मजबूत और स्थायी है। 1949 में भारतीय रेलवे के लिए सबसे पहले ऋण के बाद से, WBG के वित्तपोषण, विश्लेषणात्मक कार्य, और सलाहकार सेवाओं ने देश के विकास में योगदान दिया है। भारत जैसे विकासशील देशों के लिए गठित WBG की आसान ऋण देने वाली शाखा International Development Association ने उन गतिविधियों का समर्थन किया जिनका प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण करने; ग्रामीण आजीविका परियोजनाओं की श्रृंखलाओं के द्वारा ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाने, हरित और श्वेत (दुग्ध) क्रांति के समर्थन के माध्यम से कृषि क्षेत्र में क्रांति लाने, और पोलियो, टीबी और एचआईवी/एड्स से निपटने में उल्लेखनीय योगदान रहा। तीन सबसे बड़े निवेश क्षेत्र कृषि (कुल 3.7बिलियन डॉलर की प्रतिबद्धताओं के 15 परियोजनाएं), शहरी विकास (कुल 3.7 अरब डॉलर की 17परियोजनाएं), और परिवहन (कुल 2.9 बिलियन डॉलर की 10 परियोजनाएं) हैं।

वित्त वर्ष 2021 में, बैंक ने 3.16 बिलियन डॉलर राशि के 14 परयोजनाओं को मंजूरी दी। इसमें से 2.65 बिलियन डॉलर का ऋण आईबीआरडी से और 0.5 बिलियन डॉलर आईडीए से है। वित्त वर्ष 2022 के लिए एक मजबूत पाइपलाइन है, जिसमें कुल 3.4 बिलियन डॉलर की शर्तों के साथ लगभग 20परियोजना के संचालन किए जाने की उम्मीद है। आईएफसी के लिए, भारत सबसे बड़ा ग्राहक देश है जो इसके वैश्विक निवेश का 10 प्रतिशत (6.3 बिलियन डॉलर) है। 1958में अपने पहले कार्य से अब तक, आईएफसी ने भारत में 500 से अधिक कंपनियों में 24 बिलियन डॉलर से अधिक का निवेश किया है। भारत 4.01 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ आईएफसी का छठा सबसे बड़ा शेयरधारक है। विश्व बैंक और आईएफसी विभिन्न क्षेत्रों में एक साथ काम करते हैं जिनमे ऊर्जा, परिवहन, पानी और स्वास्थ्य प्रमुख हैं। विश्व बैंक ने हाल ही में अपनी एक रिपोर्ट जारी की, इस रिपोर्ट में कहा गया है कि 2011की तुलना में 2019में भारत में गरीबी 12.3% कम है।

गरीबी की संख्या 2011 में 22.5% से घटकर 2019 में 10.2% हो गई है। विश्व बैंक के नीति शोध पत्र के अनुसार, शहरी भारत की तुलना ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी में कमी अधिक थी। 2011 से 2019 के दौरान ग्रामीण गरीबी में 14.7% जबकि शहरी गरीबी में 7.9% की गिरावट आई है।

इस अध्ययन के अनुसार, छोटे आकार के जोत वाले किसानों ने उच्च आय वृद्धि का अनुभव किया है। 2013 और 2019 में दो सर्वेक्षण दौरों के बीच सबसे छोटी जोत वाले किसानों की वास्तविक आय में वार्षिक रूप से 10% की वृद्धि हुई है, जबकि सबसे बड़ी जोत वाले किसानों के लिए 2% की वृद्धि हुई है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की ओर से प्रकाशित वर्किंग पेपर में भी कहा गया था कि भारत ने अधिकांश गरीबी को लगभग समाप्त कर दिया है। साथ ही राज्य की ओर से दिए जाने वाले स्थानीय खाद्य वितरण के माध्यम से 40 वर्षों में उपभोग असमानता अपने निम्नतम स्तर पर हैं। विगत 100 वर्षों के आर्थिक स्वरुप का विवरण निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

भारत के प्रमुख बाहरी ऋण संकेतक

(प्रतिशत, जब तक अन्यथा इंगित न किया गया हो)							
अंत से मार्च	बाहरी ऋण (अरब अमेरिकी डॉलर)	सकल घरेलू उत्पाद के लिए बाहरी ऋण का अनुपात	ऋण सेवा अनुपात	विदेशी मुद्रा भंडार का कुल ऋण से अनुपात	कुल ऋण के लिए रियायती ऋण का अनुपात	विदेशी मुद्रा भंडार के लिए अल्पकालिक ऋण का अनुपात	अल्पकालिक ऋण (मूल परिपक्वता) का कुल ऋण से अनुपात
1	2	3	4	5	6	7	8
1991	83.8	28.3	35.3	7.0	45.9	146.5	10.2
1996	93.7	26.6	26.2	23.1	44.7	23.2	5.4
2001	101.3	22.1	16.6	41.7	35.4	8.6	3.6
2006	139.1	17.1	10.1#	109.0	28.4	12.9	14.0
2007	172.4	17.7	4.7	115.6	23.0	14.1	16.3
2008	224.4	18.3	4.8	138.0	19.7	14.8	20.4
2009	224.5	20.7	4.4	112.2	18.7	17.2	19.3
2010	260.9	18.5	5.8	106.9	16.8	18.8	20.1
2011	317.9	18.6	4.4	95.9	14.9	21.3	20.4
2012	360.8	21.1	6.0	81.6	13.3	26.6	21.7
2013	409.4	22.4	5.9	71.3	11.1	33.1	23.6
2014	446.2	23.9	5.9	68.2	10.4	30.1	20.5
2015	474.7	23.8	7.6	72.0	8.8	25.0	18.0
2016	484.8	23.4	8.8	74.3	9.0	23.2	17.2
2017	471.0	19.8	8.3	78.5	9.4	23.8	18.7
2018	529.3	20.1	7.5	80.2	9.1	24.1	19.3
2019	543.1	19.9	6.4	76.0	8.7	26.3	20.0
2020.R	558.4IDS	20.9	6.5	85.6	8.8	22.4	19.1
2021.PR	573.7	21.2	8.2	100.6	9.0	17.5	17.6
2022 P	620.7	19.9	5.2	97.8	8.3	20.0	19.6

R: संशोधित। PR: आंशिक रूप से संशोधित। P: अनंतिम।

1 आईएमएफ की 2013 बाहरी ऋण सांख्यिकी (IDS) गाइड में निर्धारित अवधारणाएं राष्ट्रीय लेखा प्रणाली (SNA) 2008और आईएमएफ के भुगतान संतुलन और अंतर्राष्ट्रीय निवेश स्थिति मैनुअल (BPM 6) के छठे संस्करण में प्रकाशित हुई हैं।

2 SDR: विशेष आहरण अधिकार।

मुख्य महाप्रबंधक : प्रेस विज्ञप्ति: 2022–23/450

References

1. Agriculture. Indian Journal of Agricultural Economics. 1994;XLIX(1).
2. Aguilar Mario, Jit Gill, LivioPino. Preventing Fraud and Corruption in World Bank Projects: A Guidefor Staff. Washington D.C.: World Bank. Interview; c2004.
3. Ahmed S, Ghani E. Making Regional Cooperation Work for South Asia's Poor, Policy Research Working Paper 4736, World Bank, Washington, DC; c2008.
4. Alok Kumar. Private Investment in Indian Agriculture, Journal of Indian Economy. 1999-2000;47(2):27-40.
5. Asian Development Outlook, (Manila: Asian Development Bank; c2008-2009. p. ll.
6. Balakrishnan P. Agriculture and Economic Reforms: Growth and Welfare, Economic and Political Weekly; c2000. p. 4-10.
7. Government of India Ministry of Agriculture Department, State of Indian Agriculture, Cooperation Directorate of Economics and Statistics New Delhi; 2012-13.
8. https://www.worldbank.org/hi/country/india
9. world-bank-releases-world-development-report-2021.htm